सेवण घास की रोटी

गोपाल कृष्ण व्यास

गांव में कोरोना के कारण कोई भी रोजगार का साधन नहीं रहा। घर में जो कुछ भी खाने को था उसकी इति श्री हो चुकी थी। सुबह-सुबह जल्दी उठ कर कोयली नित्य कर्म से निवृत्त होकर घर के अंदर आई और रसोई में जाकर खाने की सामग्री टटोलने लगी। घर में बचा कर रखा खाने का सामान सब खत्म हो चुका था। न आटा, न दाल, न चावल, कुछ भी नहीं था। रसोई से बाहर आकर सामने सो रहे अपने तीन बच्चों को निहारने लगी। फिर सिहर उठी और सोचने लगी अभी बच्चे उठेंगे और नित्य कर्म से निवृत्त होकर खाना मांगेंगे, कहां से लाऊंगी इनके लिए खाना? थोड़ी देर बाद अनायास वह घर के बाहर निकली और सामने लगी खेजड़ी से सांगरी तोड़ने लगी। सांगरी तोड़ने के बाद घर से कुछ दूरी पर लगी सेवण घास भी उखाड़कर लाई।

बच्चे उठे तो कोयली ने उन्हें तुरंत तैयार होने को कहा। बच्चे दिनचर्या के कार्य करके वापस आए। आते ही कोयली ने अपने पुत्र सोहन से कहा-महाराणा प्रताप के लिए जो कविता लिखी है वह तुम्हें आती है? सोहन बोला-हां मां, आती है। तब मां कोयली के कहने पर सोहन कविता वाचन करने लगा

घास री रोटी ही
जद बन बिलावड़ो ले भाग्यो
नान्हों सो अमर्यो चीख पड़्यो
राणा रो सोयो दुख जाग्यो।

इतना सुनते ही मां कोयली बोली,

पता है महाराणा प्रताप का बेटा घास की रोटी क्यों खाता था? बच्चे पूछने लगे क्यों? तो मां बोली, घास की रोटी में बहुत ताकत होती है। राजकुमार इसलिए घास की रोटी खाते थे। इतना सुनते ही बच्चे बोले-मां हम भी आज घास की रोटी खाएंगे। इतना सुनते ही कोयली रसोई की तरफ मुड़ी ओर अपने ओढ़ने से आंखों के आंसू पोंछ कर जल्दी-जल्दी सेवण घास की रोटियां बनाने लगी। रोटियां बनाते समय उसकी आंखों से आंसू की धारा रुकी नहीं। बच्चों ने मां से पूछा- आप क्यों रो रही हैं? वह बोली- ये आंसू नही हैं, चूल्हे से निकलने वाली धुएं के कारण आंखों से पानी निकल रहा है। तुम बाहर जाकर बैठो मैं खाना लेकर आती हूं। कुछ देर बाद मां कोयली घास की बनी तीन-चार रोटियां ओर सांगरी की सब्जी लेकर आई और बच्चों को परोसी। जैसे ही थाली देखी बच्चे घास की रोटी खाने के लिए उतावले हो गए और खाने लगे। खाते-खाते एक दूसरे को कहने लगे- हम भी अब राजकुमार की तरह ताकतवर हो जाएंगे।

उनको देख कोयली की आंखों में जो पछतावा था वह स्वाभिमान में बदल गया परंतु मां का दिल सेवण घास को निहारता हुआ रो रहा था।